International Journal of Scientific Research in Engineering and Management (IJSREM)
Volume: 10 Issue: 03 | March - 2026 SJIF Rating: 8.659 ISSN: 2582-3930

बुन्देलखण्ड की संस्कृति और लोकजीवन का ऐतिहातसक, सामातजक एवं सांस्कृतिक अध्ययन

वीरेन्द्र कुमार सरसैया 1, अनिल कुमार दुबे, 2 सपिा*3, योनिता निवेदी4, अंजुलता5

1 श्रीमती नवद्यावती कॉलेजऑफ़ एजुकेशि, झाँसी (उ.प्र.), भारत
2 श्रीमती नवद्यावती कॉलेजऑफ़ एजुकेशि, झाँसी (उ.प्र.), भारत
*3,4नशक्षा संस्थाि, बुन्देलखण्ड नवश्वनवद्यालय, झाँसी (उ.प्र.), भारत (उ.प्र.), भारत
5वीरांिििा महारािी लक्ष्मीबाई राजकीय महिला मिहिद्यालय, झाँसी (उ.प्र.), भारत
*संवाद लेखक (Corresponding Author)
ई-मेल पता: sch.sapnasin16@bujhansi.ac.in

साराशं
बुन्देलखण्ड भारत का एक ऐनतहानसक एवं सांस्कृनतक रूप से समृद्ध क्षेत्र है, जो उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश के कुछ भािोंं में नवस्तृत है। यह क्षेत्र अपिी वीरिाथाओं, लोकपरपंराओं, लोकिीतों, लोकिृत्यों, धानमिक आस्थाओं तथा नवनशष्ट सामानजक जीवि के नलए प्रनसद्ध है। प्रस्तुत शोध-पत्र में बुन्देलखण्ड की संस्कृनत के नवनवध आयामों— ऐनतहानसक पृष्ठभूनम, लोकसंस्कृनत, भाषा-सानहत्य, जीवि-मूल्य, स्थापत्य-कला तथा सामानजक संरचिा—का नवश्लेषणात्मक अध्ययि नकया िया है। यह शोध इस निष्कषि पर पहुँचता है नक बुन्देलखण्ड की लोकसंस्कृनत भारतीय संस्कृनत की मूल धारा का अनभन्ि अंि होते हुए भी अपिी नवनशष्ट क्षेत्रीय पहचाि रखती है।

मुख्य शब्द: बुन्देलखण्ड, लोकसंस्कृनत, लोकिीत, वीरिाथा, जीवि-मूल्य, स्थापत्य, बुन्देली भाषा

1. प्रस्तावना
संस्कृनत नकसी भी समाज की आत्मा होती है। यह केवल परंपराओं का संग्रह िहीं, बनल्क जीवि जीिे की समनष्टित पद्धनत है। बुन्देलखण्ड की संस्कृनत भारतीय सांस्कृनतक चेतिा की एक महत्त्वपणूि अनभव्यनि है। यहाँ की लोकपरंपराएँ, रीनत-ररवाज, धानमिक आस्थाएँ और ऐनतहानसक स्मृनतयाँ क्षेत्रीय अनस्मता को सशि बिाती हैं।

संस्कृनत की अवधारणा और स्वरूप

आधुनिक काल में संस्कृनत शब्द नवशेष प्रयुि होता है। इस शब्द का क्या अथि है अथवा इसका क्या तात्पयि है, इस नवषय को लेकर नवद्वािोंं में मतैक्य िहीं है। एक नवद्वाि अपिे नवचार के अिुसार संस्कृनत की अपिी पररभाषा देता है तो अन्य नवद्वाि नभन्ि पररभाषा प्रस्तुत कर देता है। इस नवषय में सविप्रथम यह कथ्य है नक संस्कृनत शब्द संस्कृत भाषा का शब्द है नजसकी व्युत्पनत्त सम् उपसिि पवूिक कृ धातु से सुष तथा निि् (नत) प्रत्यय के योि से की ियी है। इस व्युत्पनत्तलब्ध अथि की दृनष्ट से रखते आचायि हजारी प्रसाद निवेदी िे नलखा है नक मिुष्य की श्रेष्ठ साधिाएं ही संस्कृनत है।

उपयुि पररभाषा के सन्दभि में ही बाबू िुलाब राय िे नलखा है नक संस्कृनत शब्द का सम्बन्ध संस्कार से है, नजसका अथि है – संशोधि करिा, उत्तम बिािा, पररष्कृत करिा (गुलाबराय, 03)। अंग्रेजी में संस्कृनत से नमलता-जुलता शब्द कल्चर है, नजसका अथि भी यही है – पैदा करिा या सुधारिा। इस नवषय में उपनिषद् सानहत्य में उल्लेख है नक संस्कृनत से सम्बनन्धत संस्कार व्यनि के भी होते हैं और जानत के भी। जानतित संस्कारों को भी संस्कृनत कहते हैं। उपयुिि नववेचि के सन्दभि में नवनभन्ि नवद्वािोंं िारा प्रस्तुत संस्कृनत की नवनभन्ि पररभाषाओं का अवलोकि करिा प्रासंनिक होिा।

संस्कृहत मानि जीिन के बौहिक्, नैहतक और सामाहजक हिकास का समग्र रूप िै, जो व्यहि और समाज के जीिन-व्यिार को हिशा प्रिान करती िै। भारतीय तथा पाश्चात्य हिद्वानों ने संस्कृहत की अिधारणा को हिहभन्न दृहियों से पररभाहित हकया िै। प्रहसि िाशशहनक डॉ. सिशपल्ली राधाकृष्णन के अनुसार, "संस्कृहत गिन हििेक तथा बुहि के द्वारा जीिन को भली-भााँहत जान लेने की प्रहिया िै" (राधाकृष्णन, 1956)। इसी प्रकार डॉ. मंगलिेि शास्त्री संस्कृहत को समाज के जीिन-व्यिार और सामाहजक सम्बन्धों में हनहित मानिीय आिशों और प्रेरणािायी तत्िों की समहि मानते
िैं, जो मानिता के हिकास में सिायक िोते िैं (शास्त्री, 1964)।

हिन्िी साहित्यकार डॉ. बाबू गुलाबराय ने संस्कृहत की व्यापक व्याख्या करते िुए किा िै हक "संस्कृहत मनुष्य के मूल, ितशमान और भािी जीिन का सिाांगपूणश प्रकार िै; िमारे जीिन का ढगं िी िमारी संस्कृहत िै" (गुलाबराय, 1974, पृ. 6)। इसी संिभश में डॉ. सत्यकेतु हिद्यालंकार का मत िै हक मनुष्य हिंतन और प्रयास के माध्यम से अपने जीिन को सरल, सुन्िर और कल्याणमय बनाने के हलए जो साधना करता िै, उसका पररणाम संस्कृहत के रूप में प्रकट िोता िै (हिद्यालंकार, 1960)।

भारतीय हिंतन परम्परा में संस्कृहत को बिुआयामी जीिन-व्यिस्था के रूप में िेखा गया िै। कन्िैयालाल के अनुसार लोक और पारलौहकक, धाहमशक, आध्याहत्मक, आहथशक तथा राजनीहतक जीिन से सम्बि मानिीय हििारों, मनोिृहियों और हियाओं के समहन्ित रूप को संस्कृहत किा जा सकता िै (कन्िैयालाल, 1958)। िूसरी ओर, आधुहनक पाश्चात्य हिंतक टी. एस. इहलयट संस्कृहत को केिल हिहभन्न हियाओं का योग न मानकर जीिन-यापन की एक ऐसी पिहत मानते िैं, जो जीिन को साथशक और जीने योग्य बनाती िै (एहलयट, 1948)।

भारतीय हिद्वानों में डॉ. िजारी प्रसाि हद्विेिी संस्कृहत को मनुष्य की हिहिध साधनाओं की सिोिम पररणहत मानते िैं (हद्विेिी, 1952)। इसी भाि को हिन्िी के सुप्रहसि कहि रामधारी हसंि हिनकर ने अत्यंत सरल शब्िों में व्यि करते िुए हलखा िै हक "संस्कृहत हजंिगी का एक तरीका िै और यि तरीका सहियों से जमा िोकर उस समाज में छाया रिता िै हजसमें िम रिते िैं" (हिनकर, 1956)। समाजशास्त्रीय दृहि से श्यामािरण िुबे संस्कृहत को पयाशिरण का मानि-हनहमशत भाग मानते िैं। उनके अनुसार संस्कृहत हनमाशण की प्रहिया में मनुष्य प्रकृहत से सीखता अिश्य िै, हकन्तु संस्कृहत का हनमाशण अंततः मानि की सृजनात्मक हिया का पररणाम िोता िै (िुबे, 1966)। इस प्रकार हिहभन्न हिद्वानों के हििारों से स्पि िोता िै हक संस्कृहत केिल परम्पराओं या रीहत-ररिाजों का समूि निीं िै, बहल्क यि मानि जीिन के बौहिक, नैहतक, सामाहजक और आध्याहत्मक आयामों की समहन्ित अहभव्यहि िै, जो समाज के िीर्शकालीन अनुभि और मल्ूय-व्यिस्था से हनहमशत िोती िै।

डॉ. हजारी प्रसाद तिवेदी केअनुसार — "संस्कृति मनुष्य की तितिध साधनाओं की सिोत्तम परिणति है।"

सुप्रतसद्ध तहन्दी कतव रामधारी तसंह तदनकर का कथन है —
"असल में संस्कृति त ंदगी का एक ििीका है औि यह ििीका सतदयों से मा हकि उस समा में छाया िहिा है त समें हम िहिे हैं।"

श्यामाचरण दुबे केअनुसार — "संस्कृति पयाािििण का मानि तनतमाि भाग है। संस्कृति तनमााण की क्षमिाएँ मानि क प्रकृति से तमली हैं; पिंिु संस्कृति स्वयं मनुष्य की िचना है।" ध्यान िहे तक यह परिभाषा मानि तिज्ञान की दृति से दी गई है।

संस्कृति केप्रतसद्ध तविान संस्कृि आचायय ने पररभातिि तकया है — संस्कृति शब्द का अर्ा या स्वरूप इस प्रकाि है — "प्राचीन पिम्पिाओं केअनुसाि मानि ातत, क्रिाकृि मानिसमुदायस्य िा व्यापक रूपेण सामान्यिया प्राप्नीय अनुभूतिय ं, अनुमान ं िा आधाि ं ाििानां संस्कािाणां समतिि: एि मानि ातति: ; िस्य तितशिस्य मानिसमुदायस्य िा व्यापक रूपेण प्राप्नीय अनुभूतिनां, अनुमान िा आधाि ाििानां संस्कािाणां

समतिि: ए मानि ातिि: ; िस्य तितशिस्य मानिसमुदायस्य िा संस्कृति कथ्यिे।”
अर्ाािि् प्राचीन पिम्पिा केअनुसाि मानि ाति केतलए प्रत्यतक्षि अनुभूतियाँ आिै उनके आधाि पि उत्पन्न संस्काि की समति का नाम संस्कृति है।

(i) संस्कृति और सभ्यिा

संस्कृति आिै सभ्यिा केसार् आिै िैषम्य पि तिचाि किने से पूिा ह ािी प्रसाद तििेदी ने ‘तसतिलाइ ेशन’ आिै ‘कल्चि’ शब्द की ानकािी प्रदान की है। उनका कहना है — िस्तुि: सभ्यिा आिै संस्कृति के धािुगि अर्ा इन शब्द केव्यािहारिक अर्ा क स्पि किने में तिशेष सहायक नहीं ह ंगे। अंग्रे ी में ‘तसतिलाइ ेशन’ शब्द एक सामात क परिस्थिति का ब धक है। ‘तसतिलाइ ेशन’ से सामात क व्यिथर्ा केचाि उपादान का ज्ञान ह िा है—

(1) आतर्ाक व्यिथर्ा
(2) िा नीतिक संगठन
(3) नैतिक व्यिथर्ा
(4) ज्ञान ए कला का अनुशीलन

अस्तु व्यिथर्ा, संश्लेषण आिै असुिक्षा का अन्त ही ह िा है। ‘तसतिलाइ ेशन’ या सभ्यिा िहीं से शुरू ह िी है, क् ंतक ब भय का भाि दब ािा है आिै मनुष्य की कौशल िृतत्त आिै िचनात्मक प्रिृतत्त बंधनहीन ह िी है, िभी मनुष्य पशुत्वमूलक प्रिृतत्तय से ऊपि उठकि सहय ग आिै सहानुभूति के ीिन की आिे अग्रसि ह िा है।

यहाँ यह ध्यान देने य ग्य है तक आन्तरिकिा नामक तिशेषिा का यहाँ अभाि है। आगे चलकि आचाया तििेदी तलखिे हैं — सभ्यिा का आन्तरिक भाि संस्कृति है। सभ्यिा समा की बाह्य व्यिथर्ाओं का नाम है, संस्कृति व्यसि केअन्ति केतिकास का। सभ्यिा की दृति ििामान की सुतिधाओं-असुतिधाओं पि िहिी है, संस्कृति की भतिष्य या आिीि के आदशा पि। सभ्यिा तनकट की आिे दृति िखिी है, संस्कृति दूि की आिे। सभ्यिा का ध्यान व्यिथर्ा पि िहिा है, संस्कृति का व्यिथर्ा के आिीि पि। सभ्यिा के तनकट कानून मनुष्य से बडी ची है।

संस्कृति आिै सभ्यिा में क ई तिशेष अन्ति नहीं है। द न केउपादान आिै आधाि एक हैं। िे उपादान हैं — भूतम, ल, िायु, आचाि-तिचाि, िेश-भूषा आिै भाषा-सातहत्य। िहन-सहन की तशििा या सम्यक् चेिा है, उसे ही सभ्यिा कहा गया है आिै उसके मूल में चेिना काम कििी है उसे संस्कृति कहिे हैं। इस प्रकाि ये द न सिार्ा असम्बद्ध न ह कि भी पिस्पि तभन्न हैं।

(ii) भारिीय संस्कृति का स्वरूप

ैसा तक उपयुाि तििेचन से स्पि है तक संस्कृति लौतकक ए पािलौतकक उद्देश् क लेकि चलिी है। उसे न केिल आध्यास्त्मक ीिन मूल् की दृति से अतपिु भौतिक ीिन मूल् की दृति से भी उिना ही मूल्िान कहा ा सकिा है। उसमें हाँ आत्मा, ीि, गि, धमा, दशान आतद क िैचारिक तचन्तन से आिे-प्र ि तकया है, िहीं तिज्ञान, दशान, कला, सातहत्य, तशल्प, थर्ापत्य आतद तितिध क्षेत् में तिश्व क बहुि कुछ तदया है।

भाििीय संस्कृति में ीिन मूल् क यर्ार्ा की कसौटी पि पिखा ा सकिा है, िे क िे आदशा नहीं हैं।
ीिन से सम्बद्ध भाििीय संस्कृति में आत्मा केसत्य की प्रतिष्ठापना की गयी है। इस प्रकाि यहाँ तिश्व की भौतिक ही नहीं अतपिु मन िैज्ञातनक ए आध्यास्त्मक अिधािणा भी तिज्ञानमय है। इस अिधािणा ने तिश्वस्ति पि ीिन क प्रबल सम्बल तदया है। यहाँ ीिन क उन्नति नहीं ि के िखने का कािण है। अन्य संस्कृतिय में व्याप्त तनिाशािातदिा के तिपिीि यहाँ आशािातदिा ीिन का अंग बन गयी है।

(iii) संस्कृति और धमा

तकसी भी संस्कृति में सभ्यिा केस्वथर् मागादशान केतलये द प्रकाि केदृतिक ण ह सकि हैं —
(1)ीिन सम्बन्धी आध्यास्मिकिा एिं धातमाक-दाशातनक दृतिक ण
(2) उन्नि िैचारिक तचन्तन, प्रेिणाएँ एिं तियात्मक बतहमुाखी दृतिक ण

भाििीय संस्कृति प्रर्म प्रकाि केदृतिक ण की पक्षधि िही है। यही काि ण है तक िह धमा क अपने से कभी अलग न कि सकी। धमा ही सच्चे अर् ों में व्यस्ि का तनमााण कििा है, व्यस्ि केचरित् का तनमााण कििा है। धमा आत्मा की अंिदृातित से व्यस्ि केबाह्य ीिन क देखिा है, उसे मयाातदि कििा है। इस प्रकाि िह व्यािहारिक ीिन से ुडकि मानि क सच्चे अर् ों में मानि बना देिा है। धमा व्यस्ि क हाँ आत्मतचन्तन से डिा है, िहीं ीिन ीने की श्रेष्ठिम कला केसम्बन्ध में अद्भुि स्र ि भी है।

भाििीय संस्कृति में त स धमा क 'एिं धमः सनाििः ' कहकि प्रतिष्ठातपि तकया है, िह सनािन धमा तत्तिध, तत्मागी एिं तत्कमाकृि है। अन्तिात्मा, मानतसक गि एिं थर्ूल गि में ईश्विीय सत्ता क स्वीकाि किना ही इसका तत्तिधत्व है। ज्ञान, भस्ि एिं कमा इन िीन मागों से ुडा ह ने केकाि ण भाििीय धमा तत्मागी है। यह धमा सत्य, प्रेम ि शास्न्त का प्रतिपादक ह ने से तत्कमाकृि है। भाििीय संस्कृति धमा प्राण संस्कृति है औि यही काि ण है तक यहाँ धमा तकसी भी क्षेत् में अस्पृश् नहीं है। धमा केअनेक रूप हमें भाििीय संस्कृति में देखने क तमलिे हैं, ैसे — व्यस्िधमा, ातिधमा, िणाधमा, आश्रमधमा, िािर धमा, युगधमा आतद।

भाििीय सस्कंृति का तिकास – डॉ. एन्के तमत्तल – पृष्ठ–06

गि में ईश्विीय सत्ता क स्वीकाि किना ही इसका तत्तिधत्व है। ज्ञान, भस्ि एिं कमा इन िीन मागों से ुडा ह ने के काि ण भाििीय धमा तत्मागी है। यह धमा सत्य, प्रेम ि शांति का प्रतिपादक ह ने से तत्कमाकृि है।
भाििीय संस्कृति धमा-प्राण संस्कृति है औि यही काि ण है तक यहाँ धमा तकसी भी क्षेत् से अछूिा नहीं है। धमा केअनेक रूप हमें भाििीय संस्कृति में देखने क तमलिे हैं, ैसे — व्यस्िधमा, ातिधमा, िणाधमा,
आश्रमधमा, िािर धमा, युगधमा इत्यातद।

भाििीय संस्कृति का आधाि प्राप्त कि धमा यहाँ किाव्य केरूप में बदल गया है। िह मानि मात् क सम्पूणा अकमाण्य कमों से पृर्क कि देिा है। भाििीय धमा संबस्िद्ध ब्रह्म केशाश्वि सत्य पि तटका हुआ है। उस शाश्वि सत्य की प्रास्प्त हेिु भाििीय मानि का सम्पूणा ीिन ऐसे सांस्कृतिक धिािल क प्राप्त कििा है,
हाँ िह क ई कमा क्षेत् बनकि नहीं िह ािा, उसे धमा क्षेत् भी बनना पडिा है। भाििीय संस्कृति की धमाप्राणिा का यही िहस्य है।

हाँ िक संस्कृति औि धमा में अन्ति की बाि है, िहाँ बाबू गुलाबिाय केशब्द ं में यह कहना पयााप्त ह गा तक धमा में श्रुति, स्मृतियाँ औि पुिाणग्रंर् का आधाि िहिा है, तकन्तु संस्कृति में पिम्पिा का आधाि िहिा है। इस प्रकाि धमा औि संस्कृति में क ई तिशेष भेद नहीं है। धमा देश सापेक्ष है, तकन्तु संस्कृति का सम्बन्ध देश से औि आगे बढ़कि सम्पूणा तिश्व क आिृि कि सकिा है।

(iv) संस्कृति और जीवन मूल्य

भाििीय संस्कृति में आदशा की अनुप्रेिणा िही है, क् ंतक इस संस्कृति केसंिाहक िैतदक मंत्-द्रिा ऋतष-महतषा, मुतन, य गी, िपस्वी, महापुरुष िहे हैं। उन् ंने माननीय ीिन मूल् ं क समा केसम्मुख प्रस्तुि किने के महान प्रयास में अपना आदशा उपस्थर्ि तकया है। भाििीय संस्कृति क शाश्वि प्रिाही बनािे हुए उन् ंने यह अनुभि तकया है तक माननीय आचिण ीिन ीने केसुन्दि स पान ह ं, अिः ीिन संचालन में मानदण्ड उपस्थर्ि ह ने चातहए। िे मानदण्ड ही ीिन मूल् केरूप में यहाँ प्रतितष्ठि पाए ािे हैं।

भाििीय संस्कृति केकणाधाि मानि ाति की भाििी आशा का स्तम्भ ीिन मूल् ं में तनतहि मानिे हैं।

मानि क सच्चे अर्ोंं में मानि बनाने का श्रेष्ठ उपकिण ीिन मूल् ही हैं, त नके माध्यम से िह अपना सांस्कृतिक ीिन तनतमाि किि ा है। िस्तुिः तकसी भी िािर का मूल्ांकन िहीं केसमा केआचािग मूल् केआधाि पि ही ह िा है। प्रत्येक िािर की एक पिम्पिागि संस्कृति ह िी है, त सका सृ न उन मूल् के आधाि पि ह िा है, त न्ें िहाँ केमहापुरुष ंने अपने ीिन में अपनाया है।

िस्तुिः उन मूल् केआधाि पि ही उनका चरित् एिं व्यस्ित्व गौििमय बनकि स्मिणीय रूप में अंतकि हुआ है। तकसी भी देश की भौतिक प्रगति का भी महत्व है, तकन्तु भौतिक प्रगति क उस देश का शिीि कहा ा सकिा है, बतक उसमें प्राणित्व का संचाि किने िाले ीिन मूल् ही हैं। इससे तकसी भी व्यस्ि, ाति, समा , देश ि िािर के ीिन मूल् का महत्व स्पि ह ािा है।

भािीय ीिन मूल् ं क ानने केतलए उनके आधाि क समझना आिश्क है। मानि सभ्यिा केतिकास के सार्-सार् मनुष्य ने मात् पशुत्व ीिन व्यिीि किने की अपेक्षा कुछ अिौ अच्छी िह ीिन ीने की कला सीखनी चाही ह गी। समूह में ीिन व्यिीि किने की प्रेिणा सम्भििः आत्मिक्षा केतसद्धान्त से तमली

ह गी। यही आत्मिक्षा ही सम्पूणा समूह की िक्षा में परिणि ह गयी। इसी से मानि क अमूल् ीिन का महत्व समझ में आया।(पृष्ठ संख्या 5)

लेतकन भौतिक प्रगति क उस देश का शिीि कहा ा सकिा है, बतक उसमें प्राणित्व का संचाि किने िाले ीिन मूल् ही हैं। इससे तकसी भी व्यस्ि, ाति, समा , देश ि िािर के ीिन मूल् का महत्व स्पि ह ािा है। भािीय ीिन मूल् ं क ानने केतलए उनके आधाि क समझना आिश्क है। मानि सभ्यिा केतिकास केसार्-सार् मनुष्य ने मात् पशुत्व ीिन व्यिीि किने की अपेक्षा कुछ अिौ अच्छी िह ीिन ीने की कला सीखनी चाही ह गी। समूह में ीिन व्यिीि किने की प्रेिणा सम्भििः आत्मिक्षा के तसद्धान्त से तमली ह गी। यही आत्मिक्षा ही सम्पूणा समूह की िक्षा में परिणि ह गयी। इसी से मानि क अमूल् ीिन का महत्व समझ में आया।

ीिन का महत्व समझ में आया। मानि में ीिन की आथर्ा उत्पन्न ह गयी अिौ िह अपने समूह ि समा के सभी मनुष्य ंके ीिन केमहत्व क अनुभि किने लगा। िस्तुिः इन मूल् ंका आधाि श्रुति, स्मृति, पुिाण में अन्ततनातहि सत्य एिं महापुरुष का अनुभूि सत्य एिं सत्कमा है। संक्षेप में हम कह सकिे हैं तक भािीय ीिन मूल् ंकेतनम्न आधाि ह सकिे हैं—

(1)ीिन केप्रति आथर्ा अिौ लगाि
(2) तििेकशील तचन्तन
(3) परििेश-ब ध
(4) ल क-कल्ाण की चेिना
(5) िैयस्िक उत्कृििा अर्िा आन्तरिक उन्नयन

यद्यतप िैज्ञातनक एिं युस्ििादी ज्ञान दय केआधुतनक काल में ीिन मूल् का स्वरूप िे ी से बदलने लगा है, िर्ातप भािीय संस्कृति ने ीिन मूल् क शाश्वि रूप में प्रतिष्ठातपि कि तदया है। िे आ सत्य की कसौटी पि खिे हैं। यतद नैतिकिापूणा दृति से ीिन मूल् ंकी मीमांसा की ाय ि भािीय ीिन मूल् अन्य संस्कृतिय के ीिन मूल् की अपेक्षा तनतिि, अतधक नैतिक एिं ल काििीि तसद्ध ह ंगे। भािीय संस्कृति रूपी समुद्र की अगाध गहिाई में डूबे ये ीिन मूल् संस्कृि सातहत्य में िित् की भाँति आ भी सुितक्षि हैं। संस्कृि का तिपुल सातहत्य सत्य अर्ोंं में मानि ीिन का सातहत्य है। अनेक दुःख ं, भ ग या त्याग की अपेक्षा केउपिान्त भी सामान्य ीिन मूल् की अिज्ञा नहीं किि ा।

गीिा में स्पि रूप से तनदेश है तक कमा या भाग्य की भािना क छ डकि किाव्य कमा का आचिण किना ही ीिन मूल है।

(v) संस्कृति और जीवन दशयन

भाििीय संस्कृति मनुष्य िीा उसके ािीय ीिन क लेकि परिितािि ह िी है। संस्कृति ही व्यस्ि के ीिन दशान क तनधाारिि कििी है। दशान के तबना मनुष्य ीिन आधाििहीन ह ािा है। इसतलए भाििीय मनीतषय ने पुरुषार्ा चिुिय (धमा, अर्ा, काम, म क्ष) की य ना की है। धमा से युि अर्ा िीा काम िांछनीय हैं। धमा के तबना ये द न पशुिि आचिण की श्रेणी में परिणि ह ंगे। म क्ष नामक पुरुषार्ा मात् व्यस्ि का उद्देश् नहीं। इसके तलए सिप्रर्म धमा की मयाादाओं का पालन अपेतक्षि ह गा।

इस सन्दभा में आचाया ह ािी प्रसाद तििेदी ने मनुस्मृति के एक अध्याय के उस्िस्खि तिधान क उद्धृि तकया है —

“ऋणातन तिण्यपाकृत्य मनो मोक्षे तनवेशयेि्। अनपाकृत्य मोक्षन्तु सेवमानो व्रजत्यधः ॥”

(मनुष्य के तलए यह िांछनीय है तक िह िीन ऋण क चुकाने के बाद ही म क्ष के तिषय में स चे।)

इसी प्रकाि धमा के अनुकूल ‘काम’ नामक पुरुषार्ा क स्वीकाि किने की बाि गीिा में कही गयी है —
“धमायतवरुद्धो भूिेिु कामोऽस्मि भरिियभ।”

इसी प्रकाि पुरुषार्ों के तिषय में तिचाि किना संस्कृति का प्रय न है।(पृष्ठ संख्या 6)

शुरू ह िी है, क् ंतक ब भय का भाि दब ािा है िीा मनुष्य की कुंतठि िृतत्त िीा िचनात्मक प्रिृतत्त बंधनहीन ह िी है, िभी मनुष्य पशुसम प्राकृतिकिा से ऊपि उठकि समझौिे िीा सहानुभूति के ीिन की िीा अग्रसि ह िा है।[15]

यहाँ यह ध्यान देने य ग्य है तक आन्तरिकिा नामक तिशेषिा का यहाँ अभाि है। आगे चलकि आचाया तििेदी तलखिे हैं – सभ्यिा का आन्तरिक प्रभाि ‘संस्कृति’ है। सभ्यिा समा की बाह्य व्यिस्र्ाओं का नाम है, संस्कृति व्यस्ि के अन्ति के तिकास का। सभ्यिा की दृति ििामान की सुतिधा–असुतिधाओं पि िहिी है, संस्कृति की भतिष्य या िीि के आदशों पि। सभ्यिा न दीक की िीा दृति िखिी है, संस्कृति दूि की िीा। सभ्यिा का ध्यान व्यिस्र्ा पि िहिा है, संस्कृति का व्यिस्र्ा के िीि पि। सभ्यिा के तनकट कानून है।लेतकन संस्कृति की दृति में मनुष्य कानून से पिे है। सभ्यिा बाह्य ह ने के काण चंचल है, संस्कृति आन्तरिक ह ने के काण स्र्ायी है।[16]बाबू गुलाब िाय इस तिषय में अपना मि व्यि कििे हैं तक सभ्यिा मूल अर्ा में ि व्यिहाि की सभ्यिा की घ िक ह िी है (सभ्य: साधु: सम्यक:) तकन्तु अर्ा तिस्ताि से यह शब्द िहन–सहन की उच्चिा िर्ा सुखमय ीिन व्यिीि किने के साधन ैसे – कला–कौशल, स्र्ापत्य, ज्ञान–तिज्ञान की उन्नति पि लागू ह िा है। त स सभ्यिा का आधाि संस्कृति में नहीं है िह सभ्यिा सभ्यिा नहीं। संस्कृति की आत्मा के तबना सभ्यिा का शिीि शि की भाँति तनष्प्राण िहिा है। तिनय िीा शील के तबना कीमिी–छ टी प शाक, सुगस्न्ध इत्, सेंट िीा पाउडि मनुष्य क सभ्य नहीं बना सकिे। तिनय िीा शील के बाहिी रूप क ही तशिाचाि कहिे हैं, तकन्तु यह भी तदखािा मात् नहीं है। तशिाचाि का अर्ा है, तशि का आचिण, तकन्तु इसमें रूतढ़य पिम्पिा की भािना प्रधान िहिी है।[17] ‘सभ्य’ शब्द का सामान्य अर्ा ह िा है – स्र्रि। ‘सभा’ से ‘सभ्यिा’ शब्द बनिा है। त सका अर्ा हुआ – स्र्रििा। सभ्यिा या स्र्रििा एक सामात क गुण है। मनुष्य एक सामात क प्राणी है िीा सभ्यिा का उदय भी समा से ही हुआ है। इस दृति से मनुष्य का सभ्यिा से गहिा सम्बन्ध है। तकसी व्यस्ि, िाि या ाति की सभ्यिा का ज्ञान उसके िहन–सहन, िीति– रििा , खान–पान िर्ा भाषा–सातहत्य से तकया ािा है। यही आचाि–शास्त्र है। ये आचाि ही संस्कृति के मापक, परिचायक िीा तनधाािक हैं।[18]

संस्कृति का सामान्य अर्ा ह िा है – संस्कारिि किना या परिष्किण किना। यह संस्काि या परिष्काि ही सभ्यिा है। संस्काििहीन व्यस्ि क क ई भी सभ्य नहीं कह सकिा। संस्कृि व्यस्ि ही सभ्य कहलाने का अतधकािी है। इस में भी संस्कृति का सम्बन्ध आत्मा, मन िर्ा अन्तः किण से है। संस्कृति के िािा उच्च मानतसक उपलस्ि ह िी है। मानतसक उपलस्ि का क्षेत् भौतिक भी ह सकिा है िीा आध्यास्त्मक भी।

तकसी संस्कृि व्यस्ि से िात्पया उसके उन गुण ं से ह िा है उसके चरित्, मन िऔ आत्मा में तनतहि ह िे हैं। सभ्यिा भी एक गुण है व्यस्ि िर्ा समा िािा उत्पन्न ह िा है।[19]

उपयुि तिधान िाचस्पति गैि ला ने ज्ञान क द क तटय या श्रेतणयाँ मानी हैं – (1) अनुभि न्य (2) बुस्द्ध न्य। अनुभि न्य ज्ञान संस्कृति का िऔ बुस्द्ध न्य ज्ञान सभ्यिा का आधाि है। अनुभि न्य ज्ञान तनत्य िऔ बुस्द्ध न्य ज्ञान परिििनशील ह ने के कािण संस्कृति तनत्य िऔ सभ्यिा परिििनशील ह िी है। इस दृति से संस्कृति तकसी व्यस्ि िािा उत्पन्न नहीं ह सकिी, उसका सम्बन्ध न–समुदाय से है; तकन्तु सभ्यिा व्यस्ि िािा उत्पन्न ह िी है। संस्कृति िऔ सभ्यिा में क ई तिशेष अन्ति नहीं है। द न के उपादान िऔ आधाि एक ही हैं। िे उपादान हैं – भूतम, ल, िायु, आचाि–तिचाि, देश–भाषा–भेष िर्ा िहन–सहन की तशििा या सम्यक् चेिना है, उसे ही सभ्यिा कहा गया है िऔ उसके मूल में चेिना...

8. तनष्किय

बुन्देलखण्ड की संस्कृति केिल ऐतिहातसक धि हि नहीं, बस्ि ीिंि सामात क िास्ततिकिा है। ल कगीि, ल कनृत्य, धातमाक आथर्ाएँ िऔ थर्ापत्य इस क्षेत् की सांस्कृतिक पहचान क सुदृढ़ कििे हैं।

यह श ध स्पि कििा है तक बुन्देलखण्ड की ल कसंस्कृति भाििीय सांस्कृतिक मूल् ं—धमा, साहस, ल कक ल्ाण, सामूतहकिा िऔ नैतिकिा—का सशि प्रतिरूप है।

सन्दभय ग्रंथ सूची

1. तद स्ट िी ऑफ तसतिलाइ शेन — तिल ड्यूििंट (अनुिाद) — पृष्ठ–942
2. ह ािी प्रसाद तििेदी — पुननाििा — भाग–09 — पृष्ठ–200
3. गुलाबराय, बाबू। भारतीय सस्कंृतत: भारतीय सस्कंृतत की सस्थाएँ और प्राचीन भारतीय कला। सशंोतित एवं पररवर्द्धित सस्करण, रतवन्द्र प्रकाशन, कानपुर, 1974–75, पृष्ठ–03
4. बुन्देलखण्ड ल क ीिन — लेखक उपन्यास — 08/04/01
5. स्वितंिा िऔ सस्कंृति — तिश्वम्भि तत्पाठी — पृष्ठ–53
6. भाििीय सस्कंृति का तिकास — डॉ. बाबूिामदत्त िअथर्ी — पृष्ठ–04
7. कला िऔ सस्कंृति — डॉ. बाबूिामदत्त िअथर्ी — पृष्ठ–11
8. भाििीय सस्कंृति िऔ उसका इतिहास — डॉ. सत्यकेिु — पृष्ठ–19
9. कल्ाण — तहन्दू सस्कंृति अकं — पृष्ठ–35
10. न ट्स टुिड्ास डेतफनशेन ऑफ कल्चि — पृष्ठ–29
11. अश क के फूल — ह ािी प्रसाद तििेदी — पृष्ठ–34
12. सस्कंृति के चाि अध्याय — तदनकि ी — पृष्ठ–653
13. मानि िऔ सस्कंृति — श्ामाचिण दुबे — पृष्ठ–65
14. सस्कंृि तममासंा — िाधाकृष्ण आचाया — खंड–01 — पृष्ठ–14
15. ह ािी प्रसाद तििेदी — पुननाििा — भाग–09 — पृष्ठ–194
16. ह ािी प्रसाद तििेदी — पुननाििा — भाग–09 — पृष्ठ–195
17. भाििीय सस्कंृति — बाबू गुलाब िाय — पृष्ठ–04
18. िैतदक सातहत्य िऔ सस्कंृति — िासुदेि शिण अग्रिाल — पृष्ठ–221
19. तिसारिया शिण गुप्त के काव्य का सास्कंृतिक अध्ययन — डॉ. मनीष ैन — पृष्ठ–07
20. िैतदक सातहत्य िऔ सस्कंृति — िासुदेि शिण अग्रिाल — पृष्ठ–222
21. उपतनषद अकं — गीिा प्रेस, ग िखपुि — पृष्ठ–60, 118
22. श्रीमद्भगिद्गीिा िहस्य — बाल गंगाधि तिलक — पृष्ठ–43
23. भाििीय सस्कंृति — लेखक डॉ. तनपट लाल ैन — पृष्ठ–05
24. श्रीमद्भगिद्गीिा — अध्याय–04, श्ल क–17

25. उपतनषद अकं — पृष्ठ–25
26. श्रीमद्भगिद्गीिा — प्रर्म अध्याय, श्ल क–01; अध्याय–18, श्ल क–66
27. भाििीय सस्कं ृति — बाबू गुलाब िाय — पृष्ठ–03
28. भाििीय सस्कं ृति — बाबू गुलाब िाय — पृष्ठ–05
29. भाििीय ीिन मूल् — डॉ. धमापाल मैनी — पृष्ठ–03
30. भाििीय ीिन मूल् — डॉ. धमापाल मैनी — पृष्ठ–05–06
31. भाििीय ीिन मूल् — डॉ. धमापाल मैनी — पृष्ठ–05
32. श्रीमद्भगिद्गीिा — अध्याय–03, श्ल क–20
33. ह ाििी प्रसाद तिििेदी — पुननाििा — पृष्ठ–267
34. श्रीमद्भगिद्गीिा — अध्याय–07, श्ल क–11
35. मानस तचिंन — लेखक िामकुमाि िाय (तिद्या भूषण) — पृष्ठ–14
36. भाििीय सस्कं ृति — बाबू गुलाब िाय — पृष्ठ–06
37. भाििीय सस्कं ृति — बाबू गुलाब िाय — पृष्ठ–06
38. श्रीमद्भगिद्गीिा — अध्याय–16, श्ल क–01 से 03
39. श्रीमद्भगिद्गीिा — अध्याय–02, श्ल क–54 से 62
40. श्रीमद्भगिद्गीिा — अध्याय–17, श्ल क–07 से 22
41. भाििीय सस्कं ृति का तिकास — डॉ. एन्के तमत्तल (उद्धिण) — पृष्ठ–03
42. तिसारिया शिण गुप्त केकाव्य में सास्कं ृतिक चिना (श ध-प्रबंध) — डॉ. िा कुमाि ैन — पृष्ठ–16–17
43. मानि औि संस्कृति – श्ामाचिण दुबे – पृष्ठ–65